विदेशी गाय और भारतीय गाय में अंतर

विदेशी गौ जाति और भारतीय गायों की आकृति तथा स्वभाव में भिन्नता होती है। संक्षेप में कुछ अंतर इस प्रकार हैं-

विदेशी गाय	भारतीय गाय
१ पीठ सीधी होती है।	१. भारतीय गाय की पीठ कुछ गोलाकार होती है तथा पीठ पर कंधे का हिस्सा गोलाई लिये होता है, जिसे ककुद, कुहान या ठाटी कहते हैं, बैलों तथा सांडों में तो यह विशेष रूप से बड़ा होता है।
२ लंबाई तथा आकार भी बड़ा होता है।	२. दोनों चीजें साधारण होती हैं।
३ सींग छोटे होते हैं।	३ सींग प्रायः बड़े होते हैं।
४ ऐन बड़ा तथा घुटनों तक होता है।	४ ऐन साधारण होता है।
५ दूध अधिक देती हैं।	५ दूध साधारण देती हैं।
६ बैल परिश्रमी नहीं होते।	६ बैल परिश्रमी और उपयोगी होते हैं।
७ बहुत सीधी नहीं होतीं।	७ प्रायः सीधी होती हैं।
८ रँभाने का स्वर दबा हुआ होता है।	८ रँभाने का स्वर ऊँचा होता है।

भारतीय गायों की विभिन्न नस्लें

आकृति-प्रकृति, गुण, दोष एवं रूप-रंग को ध्यान में रखते हुए विभिन्न गोजातियों का वर्गीकरण विद्वानों ने किया है। गाय के समान ही बैल भी तरह-तरह की जाति के होते हैं। किसी में कोई गुण विशेष होते हैं, तो किसी में अन्य कोई विशेषता होती है। भिन्न-भिन्न जलवायु और लालन-पालन का गौ और उसकी संतान दोनों पर ही प्रभाव पड़ता है। एक ही जाति में अच्छे और बुरे दोनों तरह के पशुओं का होना संभव है, किंतु आमतौर पर जो विशेषताएं उनमें मुख्य रूप से देखी जाती हैं, उन्हीं से जाति-भेद की पहचान होती है।

यद्यपि एक ही जाति की कई गायों की शक्ति अलग-अलग किस्म की

Scanned with CamScanner

होती है, तथापि उनके दूध देने की शक्ति और उनके बछड़े-बछियों के गुणों पर जातीय प्रभाव पाया जाता है-

१- जो गायें दूध खूब ज्यादा देती हैं, किंतु जिनके बछड़े खेती तथा गाड़ी के काम में विशेष उपयोगी नहीं होते, उन्हें 'दुग्ध-प्रधान एकांगी-नस्ल कहते हैं।

२- जो गायें दूध कम देती हैं, किंतु जिनके बछड़े खेती या गाड़ी आदि के लिये विशेष उपयोगी होते हैं, वे 'वत्स-प्रधान एकांगी नस्ल कही जाती हैं।

३- जिन गायों का दूध भी अधिक और बछड़े भी बलवान तथा उपयोगी होते हैं वे सर्वांगी नस्ल कहलाती हैं।

विभिन्न विद्वानों का वर्गीकरण में कुछ मतभेद हो सकता हैं, तथापि स्थूल दृष्टि से यहां विभाजन किया जा रहा है-

दुग्ध-प्रधान एकांगी	वत्स-प्रधान एकांगी	सर्वांगी
साहीवाल या मांटगुमरी, लाल-सिन्धी।	पँवार, खैरीगढ़, नागौरी, अंगोल, अमृतमहाल, मालवी, नीमारी, दज्जल, भगनाड़ी, धन्नी, मेवाती, डाँगी, खिल्लारी, बछौर, आलमबादी, बारगुर, हल्लीकर।	हाँसी-हिसार, हरियाणा, थारपरकर, काँकरेज, देवनी, गावलाव, कृष्णवल्ली, राठ, लोहानी, सीरी कंगायम, गोर।

कृषि व पशु वैज्ञानिकों ने भारत की गौ जाति को कई वर्गों या भागों में बांटा है। यह विभाजन नस्लों के जन्म स्थान के आधार पर किया गया है।[८] मुख्य गो-नस्लों का वर्णन इस प्रकार है :-

(क) लंबे सींगों की मैसूरी गौ

मैसूरी गौएँ अपनी तेजी और श्रम-सहिष्णुता के लिये विशेष प्रसिद्ध हैं। इस जाति की गायों में प्रायः दूध कम होता है। इनका सिर काफी लंबा, मुंह और नथुने कम चौड़े और ललाट काफी उभरा हुआ होता है। इस जाति के पशु प्रायः छोटी रास के होते हैं। कुछ मुख्य नस्लें इस प्रकार हैं-

१- अमृतमहाल नस्ल :- यह नस्ल कर्नाटक राज्य में पायी जाती है।

Scanned with CamScanner

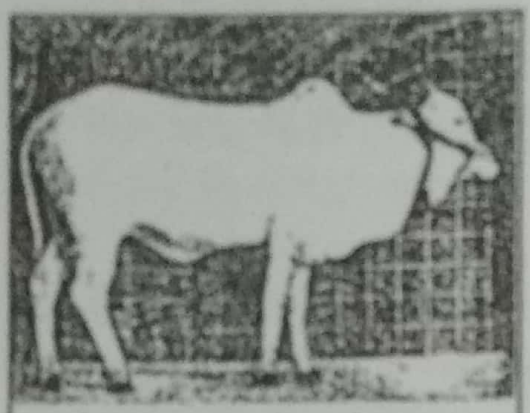

अमृतमहाल गौ

इस जाति के पशुओं का रंग खाकी तथा मस्तक, गला और थूहा काले रंग के होते हैं। इस नस्ल के बैल मध्यम कद के और फुर्तीले होते हैं।

२- हल्लीकर नस्ल :- इस नस्ल के पशु कर्नाटक राज्यभर में पाये जाते हैं। यह एक स्वतंत्र नस्ल है। इनका ललाट उभरा हुआ और बीच में घिरा हुआ सा होता है। इस नस्ल की गौएँ अमृतमहाल जाति की गौओं की अपेक्षा अधिक दुधारू होती हैं। इनके सींग लंबे और नुकीले तथा कान छोटे होते हैं।

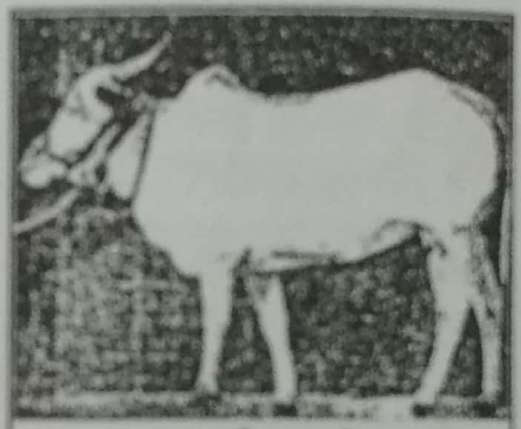

हल्लीकर गौ

३- कंगायम नस्ल :- इस नस्ल के पशु कोयम्बटूर के दक्षिणी एवं दक्षिणी-पूर्व के तालुकों में पाये जाते हैं। इनमें बहुधा दूध कम होता है। कहते हैं, इस जाति की गौएँ १० से १२ साल तक दूध देती रहती हैं। इनके कान छोटे, मस्तक मध्यम परिमाण का, गर्दन ओछी तथा पूंछ काफी लंबी होती है। यह नस्ल सर्वांगी मानी गयी है।

४- खिल्लारी नस्ल :- इस नस्ल के पशुओं का रंग खाकी, सिर बड़ा, सींग लंबे और पूंछ छोटी होती है। इनका गलकंबल काफी बड़ा होता है।

५- कृष्णातट की कृष्णवेली गौएँ :- इस जाति के पशु महाराष्ट्र के दक्षिणी भाग, आंध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के तट पर पाये जाते हैं। इस नस्ल की गौएँ काफी दूध देती हैं। यह नस्ल कई जातियों के मिश्रण से बनी है। इनका थूहा काफी बड़ा, सींग और पूंछ छोटे तथा गलकंबल काफी बड़ा होता है।

६- बरगूर नस्ल :- इस नस्ल की गौएँ कोयम्बटूर के निकट बरगूर नामक पहाड़ पर बहुतायत से मिलती हैं। इस नस्ल के पशु बड़े दुर्दमनीय होते हैं। सहनशक्ति एवं तेज चाल में ये अद्वितीय होते हैं। इन गौओं में दूध बहुत कम होता है। इनका सिर लंबा, ललाट कुछ उभरा हुआ और पूंछ छोटी होती है।

Scanned with CamScanner

७ - **आलमबादी नस्ल :-** इस नस्ल को कर्नाटक की हल्लीकर नस्ल की शाखा मानना चाहिये। इस नस्ल के बैल बड़े परिश्रमी और तेज होते हैं तथा थोड़ी खुराक पर ही निर्वाह कर सकते हैं। गौओं में दूध कम होता है। इनका ललाट उभरा हुआ और मुंह लंबा व सँकरा होता है एवं सींग लंबे होते हैं।

(ख) काठियावाड़ की लंबे कानों वाली गीर नस्ल

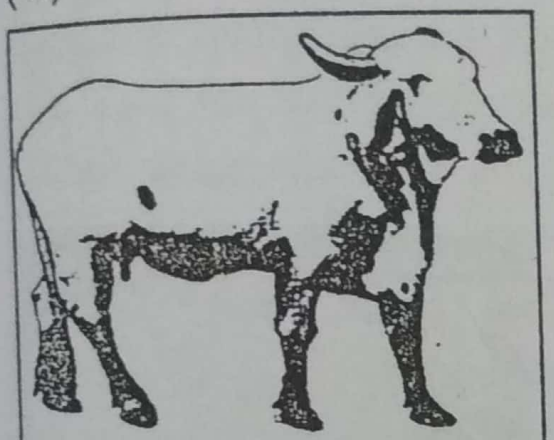

गीर गौ

यह नस्ल गुजरात में काठियावाड़ क्षेत्र के दक्षिण में गीर नामक जंगल में पायी जाती है। इनका ललाट विशेष उभरा हुआ और चौड़ा होता है, कान लंबे और लटके हुए होते हैं तथा सींग छोटे होते हैं। गीर नस्ल की गौओं का रंग विशेष प्रकार का होता है। इनका मूल रंग सफेद होता है और उस पर विविध रंगों के धब्बे होते हैं, जो सारे शरीर पर फैले रहते हैं। ये धब्बे कई गौओं में बड़े-बड़े और कई गौओं में अत्यंत छोटे होते हैं। इस जाति के पशु कर्नाटक के पशुओं की अपेक्षा आकार में बड़े होते हैं। कुछ नस्लों का विवरण इस प्रकार है-

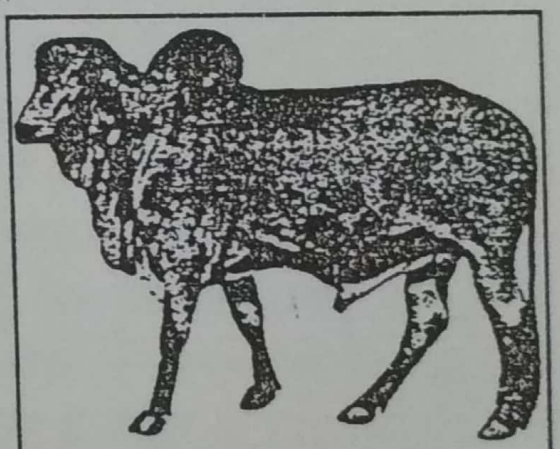

गीर साँड

१- **गीर :** गीर नस्ल के पशुओं की पीठ मजबूत, सीधी और समचौरस होती है। कूल्हे की हड्डियाँ प्रायः अधिक उभरी हुई होती हैं। वे काफी दूध देती हैं। इस जाति के बैल मजबूत होते हैं, यद्यपि ये कर्नाटक के बैलों की अपेक्षा कुछ सुस्त होते हैं, उनसे बहुधा गाड़ी खींचने का काम लिया जाता है। गीर नस्ल की गायें बच्चे नियत समय पर देती हैं।

२- **देवनी नस्ल :-** यह नस्ल महाराष्ट्र की डाँगी नस्ल से मिलती-जुलती है। इसमें गीर नस्ल से भी काफी समानता है। इस नस्ल के पशुओं के सिर और सींग गीर नस्ल जैसे ही होते हैं। ये अनेक रंग के होते हैं, पर मुख्यतः सफेद और काले तथा सफेद और लाल रंग के अधिक होते हैं। इस नस्ल के

Scanned with CamScanner

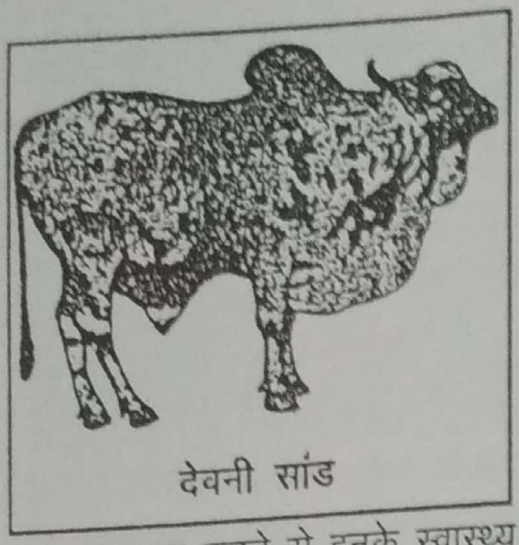

देवनी सांड

बैल खेती में अच्छा काम देते हैं तथा गौएँ आंध्र प्रदेश राज्य की अन्य नस्लों की तुलना में काफी दूध देती हैं।

३- डाँगी नस्ल :- इस नस्ल के पशु मूलतः अहमदनगर और नासिक जिलों तथा बारांदा, धर्मपुर जौहर तथा डांग्स क्षेत्रों में पाये जाते हैं। वे बड़े परिश्रमी होते हैं और धान के खेतों में लगातार काम करने से इनके स्वास्थ्य पर कोई अवांछनीय प्रभाव नहीं पड़ता। इस नस्ल की गौएँ दूध कम देती हैं। इन गौओं का रंग लाल और सफेद अथवा काला और सफेद होता है। इनकी चमड़ी में तेल की बहुत अधिक मात्रा रहती है, जो इनकी वर्षा से रक्षा करती है। इनके खुर विशेष रूप से कड़े, काले रंग के और चकमक पत्थरी आकृति के होते हैं।

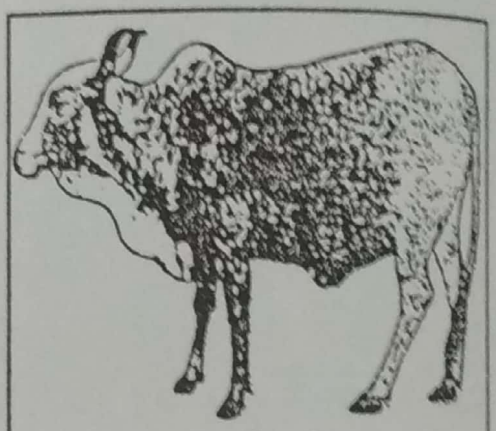

देवनी गौ

४- मेवाती नस्ल :- इस नस्ल के पशु बहुत सीधे होते हैं और भारी हलों एवं छकड़ों में जोते जाते हैं। गौएँ काफी दुधार होती हैं। उनमें गीर जाति के लक्षण पाये जाते हैं तथा कुछ बातों में ये हरियाणा नस्ल के पशुओं से भी मिलते हैं, जिससे यह पता चलता है कि यह एक मिश्रित जाति है। इनका रंग सफेद और मस्तक काले रंग का होता है तथा कुछ पशुओं में गीर जाति का रंग भी पाया जाता है। इनकी टांगें कुछ ऊँची होती है। इनके कान, ललाट और सँकरा मुँह गीर जाति के द्योतक हैं।

५- नीमाड़ी नस्ल :- इस नस्ल के जानवर बहुत फुर्तीले होते हैं। इनका रंग तथा मुँह की बनावट गीर जाति की सी होती है। इनके कान मध्यम परिमाण के होते हैं। सामान्य तौर पर इनका रंग लाल होता है, जिस पर जगह-जगह सफेद धब्बे भी होते हैं। इस जाति की गौएँ काफी दूध देती हैं।

(ग) अ. उत्तर भारत की चौड़े मुँह तथा मुड़े हुए सींगों वाली बड़े रास की गौ

गुजरात की काँकरेज नस्ल इस जाति की प्रधान नस्ल है। इस नस्ल के पशुओं का मुँह छोटा, किंतु चौड़ा होता है। राजस्थान की मालवी नस्ल

Scanned with CamScanner

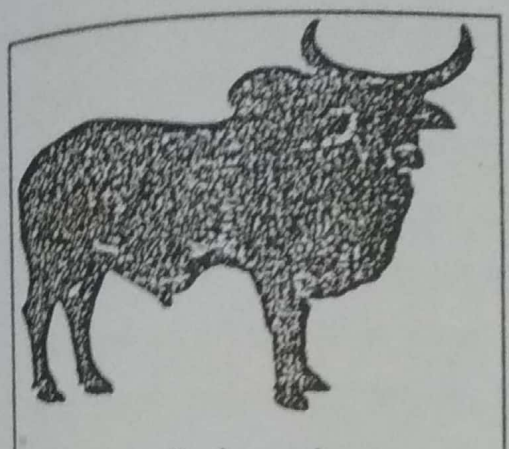

काँकरेज सांड

काँकरेज नस्ल से बहुत मिलती-जुलती है। इसका वर्गीकरण इस प्रकार है :-

१- काँकरेज नस्ल :- इस जाति के पशु भारत भर में विशेष मूल्यवान समझे जाते हैं। इसका नाम बढ़ियार भी है। यह नस्ल काठियावाड़ एवं सूरत तक फैली हुई है। इस नस्ल के पशु चलने और गाड़ी आदि खींचने में बहुत तेज होते हैं। काँकरेज जाति की गौओं की छाती चौड़ी, शरीर सबल, ललाट चौड़ा और सींग मुड़े हुए होते हैं। इनके कान लंबे और झुके हुए होते हैं। इनकी चमड़ी भारी और गलकंबल साधारण परिमाण का होता है। पूँछ अपेक्षाकृत छोटी होती है।

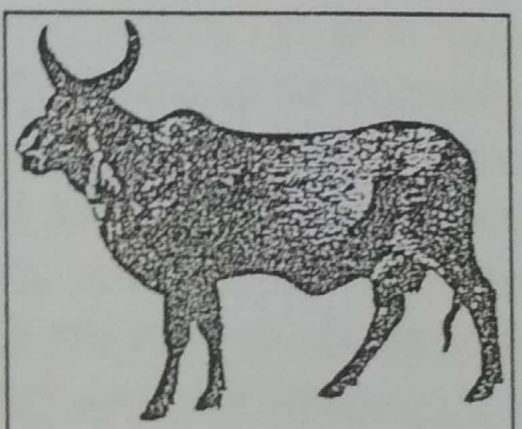

काँकरेज गौ

२- मालवी नस्ल :- इस जाति की गौओं को प्राकृतिक गोचर भूमियों में पाला जाता है और साथ-साथ उन्हें अनाज की भूसी आदि भी दी जाती है। सड़कों पर हल्की गाड़ियों को खींचने में तथा खेती में इनका विशेष उपयोग होता है। इनका रंग खाकी और गर्दन काले रंग की होती है, परंतु बुढ़ापे में इनका रंग बिलकुल सफेद हो जाता है।

मालवी नस्ल के दो अवान्तर भेद होते हैं- (अ) मध्य प्रदेश में ग्वालियर के दक्षिण-पश्चिमी भाग के बड़ी रास के पशु, (ब) इस भाग के दक्षिण-पश्चिम में पाये जाने वाले छोटी रास के पशु। इस नस्ल की गौएँ दूध कम देती हैं।

३- नागौरी नस्ल :- इस नस्ल के पशु जोधपुर (राजस्थान) के उत्तर-पूर्वी भाग में पाये जाते हैं। इस जाति के बैल आकार में बड़े होते हैं और तेज चाल के लिये प्रसिद्ध हैं। इनका मुँह अपेक्षाकृत सँकरा एवं लंबा होता है तथा ललाट चपटा। इनकी चमड़ी पतली, गलकंबल छोटा और पूँछ भी छोटी होती है। इस नस्ल की गौएँ दूध कम देती हैं।

४- थारपरकर नस्ल[१] :- कच्छ, जोधपुर एवं जैसलमेर में इस जाति के पशु बड़ी संख्या में पाले जाते हैं। इस भू-भाग में बालू के ऊँचे-ऊँचे टीले

Scanned with CamScanner

थारपारकर सांड

बहुत पाये जाते हैं और वर्षा कम होती है। ये वहां के अपर्याप्त घास एवं झाड़ियों पर निर्वाह करते हैं और साथ-साथ इन्हें गवाँर तथा अन्न की भूसी आदि भी दी जाती है। इस जाति के पशु बड़े परिश्रमी और खाकी रंग के होते हैं। इस नस्ल की गौएँ भारतवर्ष की सर्वश्रेष्ठ दुधार गायों में गिनी जाती हैं। बैल मध्यम परिणाम के होते हैं, अतएव खेती एवं गाड़ियों में जुतने के काम होते हैं। इनमें कई ऐसे गुण हैं, जिनके कारण इनकी बहुत कदर की जाती है। गायें दूध अधिक देती हैं, बैल परिश्रम अधिक कर सकते हैं और थोड़ी खुराक पर निर्वाह कर सकते हैं। इनका मुँह काफी लंबा, ललाट कुछ उभरा हुआ और थूहा मध्यम होता है।

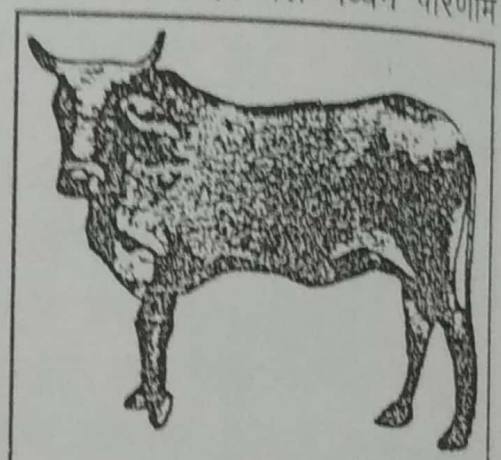

थारपारकर गौ

५- बचौर नस्ल :- इस नस्ल के पशु बिहार के सीतामढ़ी जिले के बचौर एवं कोइलपुर परगनों में पाये जाते हैं। इस जाति के बैल काम करने में अच्छे होते हैं। इनका रंग खाकी, ललाट चौड़ा, आँखें बड़ी-बड़ी और कान लटकते हुए होते हैं।

६- पँवार नस्ल :- यह नस्ल उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जिले की पटनपुर तहसील में और खेरी के उत्तर-पश्चिमी भाग में पायी जाती है। शुद्ध पँवार नस्ल के गाय-बैलों का मुँह सँकरा तथा सींग लंबे और सीधे होते हैं। इनके सीगों की लंबाई १२ से १८ इंच तक होती है। इनका रंग प्रायः काला और सफेद होता है। इनकी पूँछ लंबी होती है और ये बड़े फुर्तीले तथा क्रोधी होते हैं। ये मैदान में स्वच्छंद रूप से चरना पसंद करते हैं। गौएँ दूध कम देती हैं।

(ब) उत्तर एवं मध्य भारत की सँकरे मुँह एवं छोटे सींगवाली सफेद गौ

इस जाति के अंतर्गत मुख्य ६ नस्लें हैं :-

१- भगनारी नस्ल :- नारी नदी के तटवर्ती 'भाग' नामक इलाके में पाये जाने के कारण इस नस्ल को 'भगनारी' कहते हैं। पाकिस्तान में इस नस्ल

Scanned with CamScanner

के पशुओं की संख्या निरंतर घट रही है। इस नस्ल के पशु अपना निर्वाह नदी तट पर उगने वाले घास तथा अनाज की भूसी आदि पर करते हैं।

इस नस्ल में भी दो प्रकार के पशु होते हैं :- (१). छोटी रास के तथा (२). बड़ी रास के। इन पशुओं की गठन अच्छी तथा कद लंबा होता है। इस जाति की गौएँ अधिक दूध देने के कारण प्रसिद्ध हैं।

दज्जल नस्ल :- भगनारी नस्ल का ही यह दूसरा नाम है, इस नस्ल के पशु पंजाब के 'देरागाजीखाँ' जिले में बड़ी संख्या में पाले जाते हैं। कहते हैं कि बहुत वर्षों पूर्व इस जिले में कुछ भगनारी साँड़ खास तौर पर नस्ल सुधार के लिये भेजे थे। यही कारण है कि देरागाजीखाँ में इस नस्ल के काफी पशु हैं, यहीं से वे पंजाब के अन्य भागों में भेजे जाते हैं।

२- गावलाव नस्ल :- यह नस्ल मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र की सर्वश्रेष्ठ नस्ल है। इस जाति के सर्वोत्तम पशु सतपुड़ा की तराई के वर्धा जिले में, संसार तहसील में एवं कुरई परगने में, सिवनी तहसील के दक्षिणी भाग में, महाराष्ट्र राज्य के नागपुर जिले के कुछ भागों में और बइहर तहसील में पाये जाते हैं। ये प्रायः मध्यम कद के होते हैं। गौओं का रंग प्रायः निरा सफेद होता है और बैलों का सिर खाकी रंग का होता है। इनका सिर काफी लंबा और सँकरा, सींग छोटे और गलकंबल बड़ा होता है। खिल्लारी जाति के बैलों की भाँति ये भी समान चाल से लंबी यात्रा कर सकते हैं। गावलाव जाति की गौएँ दुधार मानी जाती हैं, परंतु वर्धा के पास बहुत से गाँव ऐसे हैं, जिनमें इस जाति की गौएँ बहुत थोड़ा दूध देती हैं। खिलाने-पिलाने की समुचित व्यवस्था एवं सँभाल से इनका दूध बढ़ाया जा सकता है।

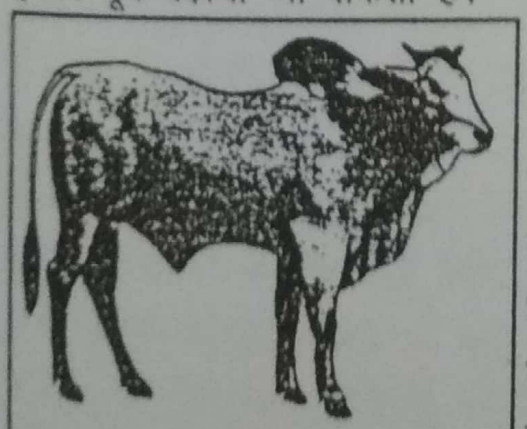

हरियाणा सांड

३- हरियाणा नस्ल :- इस जाति की गौएँ बड़ी संख्या में दूध देने के लिये प्रति वर्ष कलकत्ते आदि बड़े नगरों में भेजी जाती हैं। इस नस्ल के पशु एक विशाल भू-भाग में पाये जाते हैं। जिसमें हरियाणा, प. उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान के भरतपुर और अलवर जिले भी सम्मिलित हैं। हरियाणा जाति के बैल सफेद अथवा खाकी रंग के होते हैं। ये चलने में तेज और हल जोतने में अच्छे होते हैं।

Scanned with CamScanner

कलकत्ते में बरसात के पूर्व इनका खाकी रंग प्रायः सफेद हो जाता है। बैलों की गर्दन और थूहे काले होते हैं। गौओं और साँड़ों के सींग छोटे और मोटे होते हैं, परंतु बैलों के सींग प्रायः मुड़े हुए होते हैं।

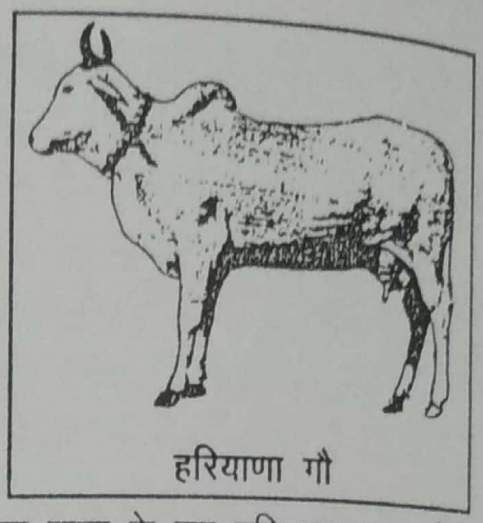
हरियाणा गौ

४- हाँसी-हिसार नस्ल :- हरियाणा के हिसार जिले में हाँसी नदी के आस-पास यह नस्ल पायी जाती है, इसी से इसका नाम 'हाँसी-हिसार' पड़ गया। इस नस्ल के पशु हरियाणा नस्ल जैसे ही होते हैं, परंतु उनकी अपेक्षा अधिक मजबूत होते हैं। इनका रंग सफेद और खाकी होता है। इस जाति के बैल यद्यपि परिश्रमी होते हैं, गौएँ हरियाणा नस्ल की खूबी को नहीं पा सकी हैं।

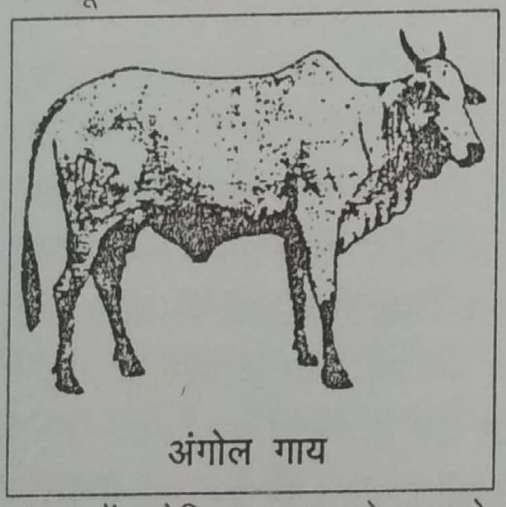
अंगोल गाय

५- अंगोल नस्ल :- आंध्र प्रदेश का अंगोल नाम का इलाका पशुओं के लिये प्रसिद्ध है। गुंटूर जिले के किसान लोग प्रायः इन पशुओं को पालते हैं। इस जाति के पशु प्रायः सीधे और बैल बड़े बलवान होते हैं, परंतु अधिक भारी होने के कारण वे तेज चलने में उपयोगी नहीं होते। इस जाति के पशु बहुत बड़ी संख्या में अमेरिकन नस्ल को सुधारने के लिये अमेरिका भेजे जाते थे। ये थोड़ा सा सूखा चारा खाकर निर्वाह कर सकते हैं। इनके शरीर अपेक्षाकृत लंबे और गर्दन छोटी होती है। ये अपने डील-डौल तथा शरीर की गठन के लिये प्रसिद्ध हैं।

६- राठ नस्ल :- ये मध्यम परिणाम के पशु होते हैं। ये बहुत फुर्तीले और मध्यम परिणाम के हल चलाने एवं सड़क पर चलने में उपयोगी होते हैं। इनकी गायें भी दुधार होती हैं। इन तीन गुणों के कारण ये निर्धन लोगों के पशु माने जाते हैं, जब कि नागौरी पशु धनवानों के पशु समझे जाते हैं।

(अ) और (ब) के मिश्रण से उत्पन्न हुई जातियाँ :-

इस जाति के अंतर्गत दो प्रसिद्ध नस्लें हैं-

Scanned with CamScanner

१- **केनवारिया नस्ल** :- यह बुंदेलखंड की प्रसिद्ध नस्ल है और उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में केन नदी के तट पर पायी जाती है। इस जाति की गौएँ दूध कम देती हैं। इनका रंग खाकी होता है। इनका मस्तक ओछा किंतु चौड़ा और सींग मजबूत एवं तीखे होते हैं। इनके सींगों तथा शरीर की बनावट से ऐसा प्रतीत होता है कि यह जाति (ग) की 'अ' और 'ब' जातियों के मिश्रण से बनी है। इनके सींग काँकरेज जाति के पशुओं से होते हैं और दूसरे अंग 'ब' वाली जाति से।

२- **खेरीगढ़ नस्ल** :- यह नस्ल उत्तर प्रदेश के खेरीगढ़ क्षेत्र में पायी जाती है। ये पशु प्रायः सफेद रंग के तथा छोटे, सँकरे मुँह के होते हैं। इनके सींग बड़े और १२ से १८ इंच तक लंबे होते हैं, वे केनवारिया नस्ल के सींगों से बहुत मिलते-जुलते होते हैं। इनके सभी लक्षण प्रायः केनवारिया नस्ल से मिलते हैं। ये क्रोधी और फुर्तीले होते हैं तथा मैदानों में स्वच्छंद रूप से चरने से स्वस्थ एवं प्रसन्न रहते हैं। इनकी गायें दूध कम देती हैं। ये तराई क्षेत्र के लिए उपयुक्त होते हैं।

(घ) साहीवाल जाति

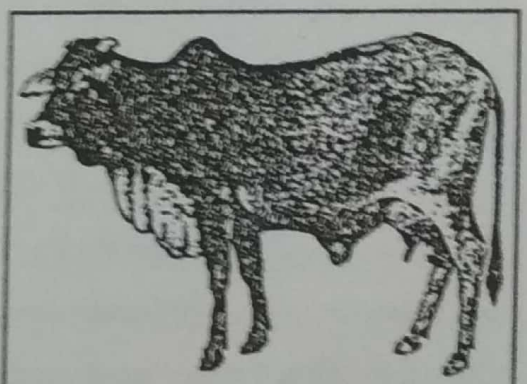

साहीवाल गौ

यह अफगान जाति तथा उत्तर भारत की गौओं के मिश्रण से बनी है।

इस जाति के पशु अफगानिस्तान के पशुओं से बहुत मिलते हैं। ये बादामी रंग के अथवा चितकबरे होते हैं। और इनकी गणना भारत की श्रेष्ठ गायों में है। यह प्रसिद्ध है कि किसी समय राजपूताने से बहुत से लोग अपने पशुओं को साथ लेकर मंटगुमरी आये थे और ऐसा माना जाता है कि यह नस्ल गीर नस्ल के सम्मिश्रण से बनी है। इनका रंग अफगान जाति की गौओं से तथा गीर जाति की गौओं से भी मिलता है।

लोगों का अनुमान है कि लाल रंग की सिंधी गाय भी इन्हीं दो जातियों के मिश्रण से बनी है। इस जाति में बलूचिस्तान के लास बेला प्रांत की नस्ल के सम्मिश्रण का भी अनुमान किया जाता है।

१- **साहीवाल नस्ल** :- ये मुख्यतया दूध देने वाले पशु होते हैं, जो प्राचीन काल में पंजाब के मध्य एवं दक्षिणी भागों में बहुत बड़ी संख्या में पाले

Scanned with CamScanner

सिंधी गौ

जाते थे। इस जाति के पशु भगनारी, हरियाणा, नागौरी एवं धन्नी आदि जातियों से सर्वथा भिन्न होते हैं। दुधार होने के कारण इस जाति की गौएँ बड़ी संख्या में शहरों में ले जायी जाती हैं। उनके दुग्धोत्पादन के परिमाण से पता लगता है कि उचित सँभाल रखने पर वे कहीं भी रह सकती हैं।

२- लाल रंग की सिंधी नस्ल :- यह नस्ल मूलतः पाकिस्तान के कराची के आस-पास और उसके उत्तर-पूर्व के प्रांत में पायी जाती है। बलूचिस्तान के लास बेला इलाके में शुद्ध सिंधी जाति के पशु पाले जाते हैं। इस जाति में अफगान नस्ल एवं गीर-नस्ल का सम्मिश्रण पाया जाता है। लाल सिंधी गौओं की गणना भारत-पाकिस्तान की सबसे अधिक दूध देने वाली गौओं में है। ये आकार में छोटी होती हैं, किंतु इनमें दूध देने की क्षमता अधिक होती है। ये चाहे जहाँ पल सकती हैं। ये लाल रंग की होती हैं और मुँह पर एवं गलकंबल में कुछ सफेद धब्बे बहुधा रहते हैं। इनके कान मध्यम परिमाण के होते हैं। इस नस्ल के पालने वाले इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। उनका कहना है कि छोटे दुग्ध-व्यवसायी के लिये सिंधी गाय सर्वश्रेष्ठ गायों में से है। इसका आकार बड़ा नहीं होता और यह अंगोल, साहीवाल आदि बड़े आकार की गौओं की अपेक्षा कम खाती है, इसकी खुराक में खर्चा कम पड़ता है और थोड़ी खुराक में भी यह अपना स्वास्थ्य अच्छा रख लेती है।

सिंधी सांड

(च) धन्नी नस्ल

सर आर्थर आलदर के मतानुसार पंजाब की धन्नी नस्ल को स्वतंत्र जाति मानना चाहिये। इस जाति के पशु मध्यम परिमाण के तथा बहुत फुर्तीले होते हैं। इनका रंग एक विचित्र प्रकार का होता है और ये पाकिस्तानी पंजाब के अटक, रावलपिंडी एवं झेलम इलाकों में तथा उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांतों,

Scanned with CamScanner

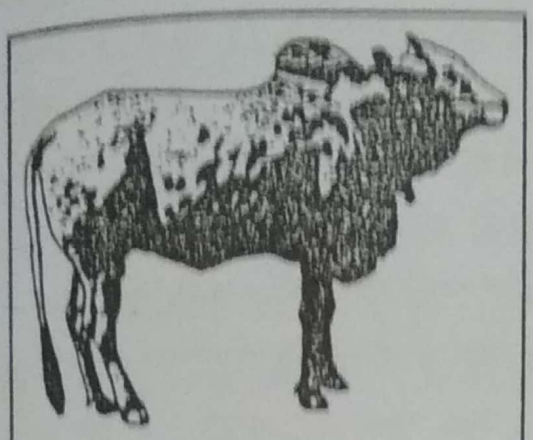

धन्नी सांड

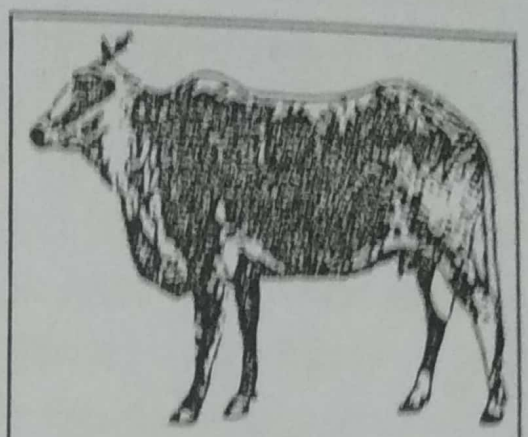

धन्नी गौ

व भारतीय पंजाब में प्रचुर संख्या में पाले जाते हैं। इस जाति की गौएँ दुधार नहीं होतीं, इसका कारण कदाचित यह हो सकता है कि लोग इनकी अधिक देखभाल नहीं करते। यही कारण है कि उनकी दुग्धोत्पादन क्षमता को विकास के लिये अवसर ही नहीं मिलता।

(छ) प्राचीन भारत की पहाड़ी गौ

समूचे भारत में, विशेषकर हिमाचल प्रदेश पर्वतीय क्षेत्र में एक छोटे रास की गो-जाति पायी जाती है, जिसका रंग, बनावट और सामान्य लक्षणों को देखने से इस विषय में संदेह नहीं रह जाता कि यह जाति प्राग-ऐतिहासिक युग से भारतवर्ष में पायी जाती है। इस जाति के पशुओं के ललाट और गलकंबल में बहुधा सफेद धब्बा होता है और पूँछ का सिरा तथा अन्य अवयवों के अंतिम भाग भी सफेद होते हैं। ये छोटे जानवर ऐसे स्थानों में भी सुखी और स्वस्थ रहते हैं, जहाँ बड़े और अधिक मूल्यवान पशु जीवित नहीं रह सकते और दूध देकर तथा पहाड़ों में काम करके मनुष्य की बहुत उपयोगी सेवा कर सकते हैं। इस जाति के पशु उत्तर में लुंडीकोटल तथा दक्षिण में कन्याकुमारी तक, पश्चिम में बलूचिस्तान और पूर्व में आसाम तक तथा भारत-पाकिस्तान के विभिन्न भागों में स्थित जंगली एवं पहाड़ी प्रदेशों में भी पाये जाते हैं। पूर्व एवं पश्चिम के समुद्र तट, कुग क्षेत्र में, नीलगिरि के पर्वतों पर तथा राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के जंगलों एवं पहाड़ी प्रदशों में भी इनके दर्शन होते हैं। यदि इन्हें अच्छी तरह खिलाया-पिलाया जाय तो ये पशु वास्तव में मूल्यवान सिद्ध होते हैं। ये बहुत परिश्रमी, फुर्तीले एवं काम के होते हैं और अपने आकार के अनुसार दूध भी पर्याप्त मात्रा में देते हैं। इनके शरीर में कोई ऐसी विशेषता नहीं होती, जिनके द्वारा इनकी जल्दी पहचान हो सके, एक बात अवश्य होती है कि इनका

Scanned with CamScanner

सिर शरीर के अनुपात से बहुत छोटा होता है। हिमालय पहाड़ की बहुत ऊँचाई पर जो बहुत छोटी रास के पशु मिलते हैं, उनके सींग बहुधा बिलकुल छोटे होते हैं, परंतु उनसे नीचे के भागों में, जहाँ उन्हें अधिक पोषण मिल सकता है, वे काफी लंबे होते हैं। जहाँ उन्हें काफी अच्छा पोषण मिल जाता है, वहाँ इस जाति की गौएँ अपने आकार के अनुपात से काफी दूध भी देती हैं।

१- सीरी नस्ल :- इस जाति के पशु दार्जिलिंग के पर्वतीय क्षेत्र में तथा सिक्किम एवं भूटान में पाये जाते हैं। इनका मूलस्थान भूटान देश ही माना जाता है और भूटान से ही इस जाति के सर्वोत्तम पशु दार्जिलिंग लाये जाते हैं। ये प्रायः काले और सफेद अथवा लाल और सफेद रंग के होते हैं। इनके शरीर बारहों महीने घने बालों से ढके रहते हैं, जो इन पर्वतीय प्रदेशों में उनकी कड़ाके की सर्दी एवं मूसलाधार वर्षा से रक्षा करते हैं। सीरी जाति का पशु देखने में भारी होता है। उसका मस्तक चौकोर और छोटा, किंतु सुडौल होता है। ललाट चौड़ा और चपटा होता है। थूहा काफी आगे निकला हुआ और कान बहुधा छोटे होते हैं। इस जाति के बैलों की बड़ी कदर होती है।

२- लोहानी नस्ल :- इस नस्ल का मूलस्थान बलूचिस्तान की लोरालाई एजेंसी है। जंगली जातियों के इलाकों में भी ये काफी फैली हुई हैं, वहाँ इन्हें 'अच्छाई' जाति के पशु कहते हैं। लोहानी जाति के पशु आकार में बहुत छोटे होते हैं, जवान पशु ४० से ४४ इंच तक ऊँचे होते हैं। इनका रंग लाल होता है, जिस पर सफेद धब्बे होते हैं, यद्यपि ऐसे पशु भी कम नहीं होते, जिनका रंग निरा लाल होता है। इस जाति के बैल हल चलाने तथा बोझा ढोने में, विशेष कर पर्वतीय प्रदेशों में बहुत उपयोगी होते हैं। कड़ी सर्दी और गर्मी सह सकते हैं।

विदेशी गाय

(१) इंग्लैंड की गोजाति

इंग्लैंड तथा वहाँ के द्वीप समूहों में मुख्य रूप से (१) शाटहार्न (छोटे सींग वाली), (२) लिंकनशायर (छोटे सींग की लाल गायें), (३) हेरीफोर्ट शायर (सफेद मुँह और शरीर लाल), (४) नॉर्थ डिवन (उज्ज्वल शरीरवाली), (५) लोंग हार्न (लंबे सींगवाली), (६) रेड पोल्ड (लाल रंग की शृंगहीन), (७) डरहम (छोटे सींग वाली), (८) वेल्स (काली गाय), (९) एवार्डिन एंगास, (१०) आयरशायर, (११) गैलवे, (१२) केरी, (१३) जर्सी तथा गर्नसी आदि गोजातियाँ

Scanned with CamScanner

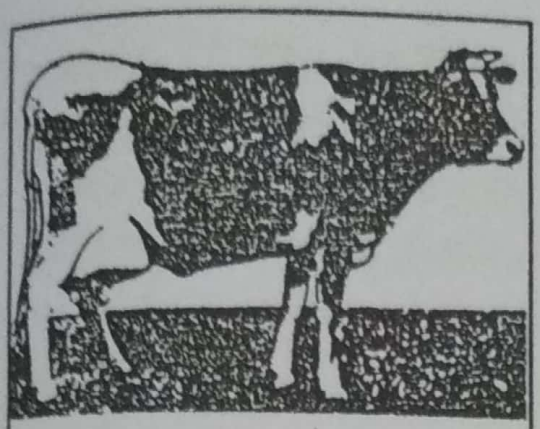

जर्सी गाय

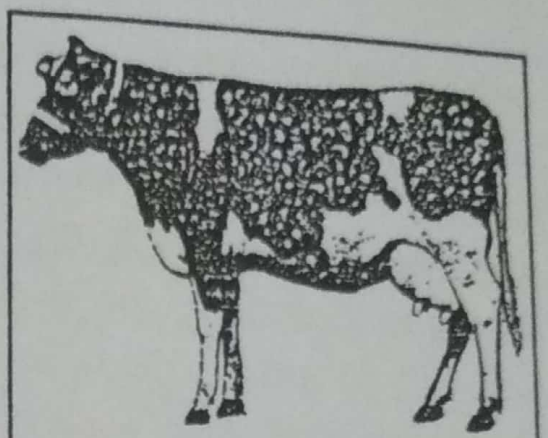

होलस्टिन गौ

पायी जाती हैं। इनमें जर्सी, गर्नसी, आयरशायर, शाटहार्न तथा केरी आदि नस्लें विशेष दुधार होती हैं। इंग्लिश चैनल द्वीपों में जर्सी नामक एक द्वीप है। वहाँ की गायें जर्सी नाम से विख्यात हैं। इस जाति की गायें दूध के लिये विश्व में प्रसिद्ध हैं और इनमें मक्खन भी अधिक निकलता है। ये प्रायः २-३ वर्ष की उम्र में ही बच्चा दे देती हैं। इनका रंग प्रायः शुभ्र और धूसर होता है। समय-समय पर भारत वर्ष से नाना जाति की गायें इंग्लैंड जाती रही हैं उसको वे लोग ईस्ट इंडियन गाय कहते हैं।

(२) हालैंड की गायें

यहाँ की गायों के बराबर पृथ्वी की किसी जाति की गाय दूध नहीं देती। यहाँ की गायें बड़े आकार की, शांत, धीर और सुंदर होती हैं। इस देश में मुख्यतः दो श्रेणी की गायें हैं-

(अ) होलस्टिन फ्रिजियन :- फ्रिजिया प्रदेश की ये गायें जर्मनी के होलस्टिन बंदरगाह से बाहर जाती हैं, इसी से अमेरिका वाले इन्हें होलस्टिन फ्रिजियन कहते हैं। फ्रिजिया का अधिकांश भाग नीचा होने के कारण यहाँ घास खूब होती है, यहाँ के गाय-बैल घास खाकर खूब लंबे चौड़े तथा बलिष्ठ हो जाते हैं। यहाँ के गो-स्वामी गोपालन के सिवा और कोई काम नहीं करते। ये गायें दूध खूब देती हैं।

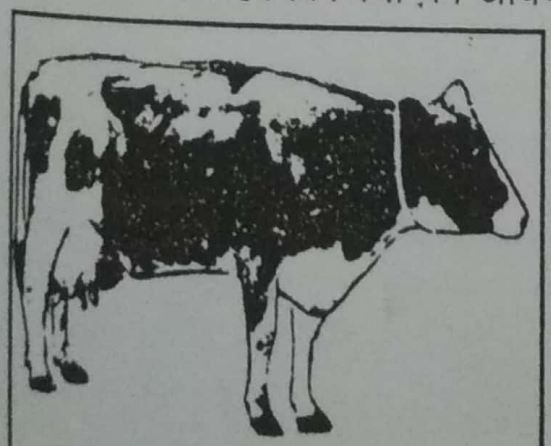

डचबेल्ट गौ

(ब) लेकेन फील्ड या डचबेल्टः- इस जाति की गायों का आदि निवास स्थान हालैंड देश है। ये इंग्लैंड की

Scanned with CamScanner

गैलवे गाय की भाँति होती हैं, पर इनके सींग नहीं होते। यूरोप में इन्हें डचबेल्ट और हालैंड में लेकेन फील्ड कहते हैं, जिसका अर्थ है वस्त्रावृत। इनका अगला-पिछला भाग काला और बीच का सफेद होता है, जिससे ऐसा मालूम पड़ता है कि एक सफेद कंबल बीच में लपेट दिया गया है, इसी से इसका नाम लेकेन फील्ड पड़ा। ये होलस्टिन गायों से छोटी होती हैं। गायें केवल दूध के लिये पाली जाती हैं। इंग्लैंड, मेक्सिको, कनाडा तथा अमेरिका में भी इस जाति की गायें हैं, किंतु इनकी संख्या कम है।[१०]

(३) बेल्जियम की गायें

इस देश की गायें अनेक अंशों में हालैंड की गायों की भाँति होती हैं।

(४) स्विट्जरलैंड की गायें

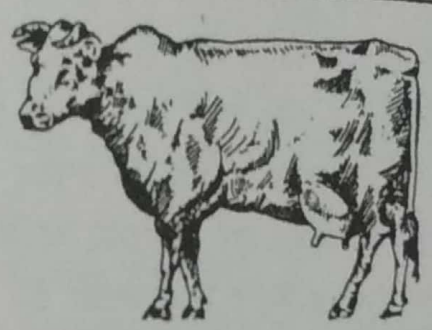

स्विट्जरलैंड की गाय

स्विट्जरलैंड में दूध का खूब विस्तृत व्यवसाय होता है। इस देश को पृथ्वी का 'गो-गृह' कहते हैं, यह राज्य ही एक गोचर भूमि है। गर्मी के दिनों में ये गायें पहाड़ी पर घास चरती हैं और जाड़े में घर रहती हैं। इनमें एक विशेष जाति की गायें हैं, जो अधिक दूध देती हैं। खूब मोटी होने से ये नाटी मालूम पड़ती हैं इनका थन सुगठित होता है और दूध की शिराएँ स्पष्ट दिखायी देती हैं। ये बड़ी आसानी से पहाड़ पर चढ़-उतर सकती हैं। देखने में भी ये गायें बहुत सुन्दर हैं।

(५) डेन्मार्क की गायें

यहाँ आल्डेन वर्ग तथा रेड डेनिस नामक दो जातियों का उत्कृष्ट गो-परिवार है। एक संमय यह समस्त यूरोप गो-गृह था और यहाँ से खोवा, मक्खन, पनीर और दूध यूरोप में जाता था। आज भी यह देश दूध-मक्खन के लिये प्रसिद्ध है। और दुग्ध उत्पादन में विश्व में अग्रणी है।

(६) नार्वे और स्वीडन की गायें

डेन्मार्क की भाँति इन दोनों देशों में भी अधिक दूध देने वाली गायें होती हैं। ये और डेन्मार्क की गायें प्रायः एक ही जाति की हैं। इस देश का अधिक भूभाग शीतकाल में बर्फ से ढका रहने के कारण यहाँ घास कम होती है, किंतु गो-पालकों के सुंदर प्रबंध के कारण घास का जरा भी अपव्यय नहीं

Scanned with CamScanner

होता, इसी से विशेष कमी नहीं पड़ने पाती। यहाँ एक स्त्री बीस-पच्चीस गायों की सेवा करती है।

(७) इटली की गायें

इस देश में अच्छी गायें नहीं हैं और न गो-जाति की उन्नति के लिये कोई चेष्टा ही होती है। यहाँ की गायों के सींग बड़े होते हैं। ये दूध देने वाली नहीं होतीं। लेकिन कहीं-कहीं अच्छी गायें भी पायी जाती हैं।

(८) फ्रांस की गायें

फ्रांस के उत्तर भाग में राइन नदी के किनारे के सिवा सब जगह नार्मेन गो-जाति दिखायी पड़ती है। इनकी देह का रंग लाल और जहाँ-तहाँ सफेद दाग होते हैं। इनके छोटे सींग सिर से उपर की ओर उठकर झुक जाते हैं और उनका अगला भाग काला होता है। पैर तपले और सुंदर होते हैं।

(९) अमेरिका की गायें

अमेरिका की कोई अपनी गो-जाति नहीं है। उत्तर अमेरिका में यूरोप से तथा दक्षिण अमेरिका में भारत से गायें आयी हैं। वर्तमान समय में इंग्लैंड तथा यूरोप की प्रायः सभी जातियों की गायें अमेरिका में हैं। इस देश के धनी गोपालक प्रदर्शनी में उत्तम गायों तथा साँडों को बहुत रकम देकर खरीद लेते हैं और इस प्रकार अपने देश के गो समुदाय तथा दुग्ध व्यवसाय की उन्नति करते हैं। यहाँ गोचारण के लिये बहुत बड़े-बड़े मैदान हैं।

(१०) कनाडा की गायें

यहाँ घास बहुत होती है, इसलिये गायों के पालन में सुविधा है। इस द्वीप में बहुत सी गायें हैं। प्रति वर्ष यहाँ से स्थूलकाय बैल विभिन्न देशों को जाते हैं। यहाँ की गायें इंग्लैंड की गो-जाति से उत्पन्न हुई हैं। जर्सी, गर्नसी आदि गायों का यहाँ विशेष आदर है।

(११) अर्जेन्टाइना की गायें

यहाँ गायों के खाने लायक घास तथा गोचर भूमि बहुत अधिक है। थोड़े दिनों में यहाँ गौ जाति की अच्छी उन्नति हुई है। पहले यहाँ स्पेन के देश की बड़े सींगों वाली मामूली

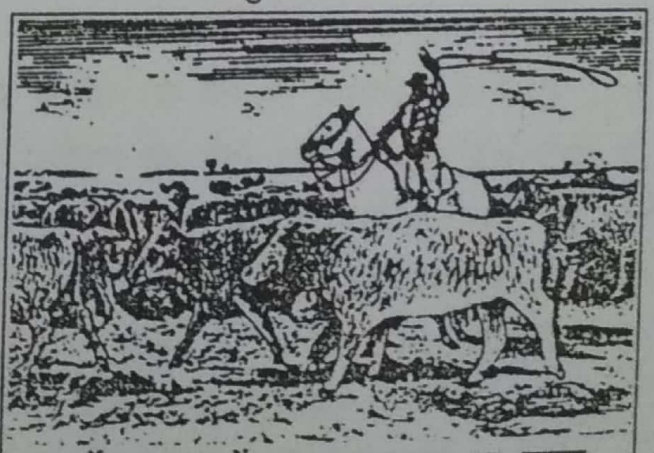

अर्जेन्टाइना में एक चरागाह का दृश्य

Scanned with CamScanner

गायें थीं, किंतु क्रमशः डरहम, छाट सींगोंवाली और हेरीफोर्ड जाति की गायें आ गयीं। अब तो होलस्टिन फ्रीजियन, जर्सी तथा अन्य जाति की गायें लाकर इस देश में मक्खन और पनीर का बड़ा व्यवसाय चल रहा है।

(१२) एरीजोना की गायें

संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिण-पश्चिम भाग में स्थित मेक्सिको और कैलीफोर्निया एरीजोना नामक प्रदेशों में उत्तम गौ पायी जाती हैं, यहां खाद्य तथा गोचारण के लिये बड़े-बड़े अनेक मैदान हैं।

(१३) ऑस्ट्रेलिया की गायें

गत शताब्दी के आरंभ मं यहाँ एक भी गाय नहीं थी, किंतु अब लाखों गायें हो गयीं। भिन्न-भिन्न जाति की श्रेष्ठ गायें ऊँचे दामों पर लाकर इतनी उन्नति की गयी है। डचबेल्ट गोजाति के साथ जर्सी और आयरशायर गोजाति के सम्मिश्रण से अत्यंत दुग्धवती संकर जाति की गायें यहाँ उत्पन्न की गयी हैं। यहाँ गोचर भूमि यथेष्ट है। आजकल यहाँ जर्सी, आयरशयर, डिवनशायर, ससेक्स, एवार्डिन एंगास आदि गायें पायी जाती हैं।

(१४) न्यूजीलैंड गायें

यहाँ की नदियों और झरनों में सदा पानी भरा रहने से घास सदा प्रचुर मात्रा में रहती है। यहाँ बहुत सी स्थायी गोचर-भूमि है। यहाँ चारे का कभी अभाव नहीं होता।

(१५) अफ्रीका की गौ जाति

(क) मिस्र की गायें :- भारतीय गायों की भाँति यहाँ की गायों के ककुद तथा गलकंबल होता है। वर्षाकाल में ये घास खाती हैं और जब अधिक वर्षा से घास के स्थान जल में डूब जाते हैं तब सूखी घास खाकर जीती हैं। अमृतमहाल गायों के बिकने के समय इजिप्ट के खदीव और पाशा मद्रास से बहुत सी गायें खरीदकर ले गये थे। लेकिन इस देश में गौ जाति की उन्नति के लिये कोई विशेष चेष्टा नहीं की जाती।

(ख) दक्षिण अफ्रीका की गायें :- दक्षिण अफ्रीका या केप कालोनी प्रदेश में हालैंडदेशीय और इंग्लिश चैनल की जर्सी जाति की दुधार गायें हैं। ये गायें बोस्टोरस जाति की हैं, किंतु केप कालोनी तथा मेडागास्कर द्वीपों में जेबू श्रेणी की गायें होती हैं। कुछ लोगों के मत से ये गायें अफ्रीका प्रवासी भारतीयों द्वारा लायी गयी हैं।

Scanned with CamScanner

(ग) कारिरेंडो की गायें :- यह अफ्रीका के पूर्व भाग में है। यहाँ के लोग गोपालक हैं। यहाँ साँडों की दौड़ होती है। जिसके पास दौड़ने वाला साँड होता है, वह देश का प्रधान व्यक्ति समझा जाता है। एक दौड़ने वाले साँड का मूल्य एक हजार गायों के मूल्य के बराबर होता है।

(घ) आइलैंड गोजाति :- अफ्रीका के जंगलों में एक प्रकार की जंगली गायें या मृग होते हैं। इंग्लैंड में इन्हें आइलैंड गाय या विदेशी गाय कहते हैं। यद्यपि ये गाय कहलाती हैं, किंतु वास्तव में गाय नहीं वरन गो-सदृश मृग हैं। जहाँ गर्मी-सर्दी अधिक नहीं पड़ती, वहीं ये रहती हैं। ये कृष्णसार जाति की हैं और उन्हीं की भाँति होती भी हैं। ये अधिक दूध नहीं देतीं।

(१६) चामरी गो (Yak)

हिमालय पर्वत के उत्तरी भागों में चामरी जाति की गायें होती हैं। ये जंगली और पालतू दोनों होती हैं। इनका शरीर घने और लंबे रोओं से ढका रहता है। इनकी गर्दन और पीठ बराबर, मुँह नीचे और पैर छोटे-छोटे होते हैं। सींग पीठ की ओर झुके हुए होते हैं। जंगली गायों का रंग काला तथा पालतू गायों का काला एवं सफेद मिला हुआ होता है। सफेद रंग की चामरी गाय की पूँछ का चमर बनता है। कुछ पालतू गायों के सींग नहीं होते, लेकिन कुछ गायों के बहुत लंबे सींग होते हैं।[११]

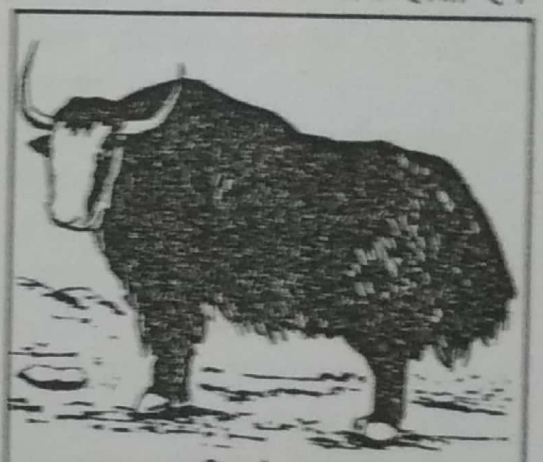

चामरी गो (Yak)

सन्दर्भ सूची

१. एनीर्धीना हरिणीः श्वेनीरस्य ।
कृष्णा धाना रोहिणी धेनवस्ते ॥
तिलमत्सा ऊर्जनस्वै दुहाना ।
विश्वाहा सन्त्यनपस्फुरन्तीः ॥
-अथर्ववेद ९८/४/३४

२. ऋतेन ऋतं नियतमीळ आ ।
गोजाता सद्मा मधुमत् पवध्यग्ने ॥

Scanned with CamScanner